JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शोधपत्र

''ध्रुवस्वामिनी'' नाटक में चित्रित पात्रों का मनोविज्ञान

सुमन
शोधार्थी
हिंदी विभाग
महर्शि दयानंद विष्वविद्यालय
रोहतक (हरियाणा)

सराष— स्वयं को जानने व समझने की जिज्ञासा प्रत्येक व्यक्ति की होती है। व्यक्ति अपने आस–पास के वातावरण में उपस्थित परिस्थितियों एवं वस्तुओं को जानने व समझने का प्रयत्न करता है। ब्रजकुमार मिश्र के अनुसार – ''मनोविज्ञान मानव व्यवहार व अनुभूतियों दोनों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है जिसमें व्यवहारों की व्याख्या अनुभूतियों के माध्यम से की जाती है।''[1] मनोविज्ञान व्यक्ति की प्रकृति, व्यवहार, कार्य प्रणाली का अध्ययन करता है। लेकिन इसका संबंध व्यक्ति के ज्ञान व्यवहार एवं कार्य करने की विधियों का अध्ययन करता है। व्यक्ति की मानसिक क्रियाओं का अध्ययन अनुभूतियों के माध्यम से किया जाता है। व्यक्ति के विचार, भावना, संवेग एक–दूसरे से कैसे प्रभावित होते हैं तथा अपने विचारों एवं भावना द्वारा दूसरे को कैसे प्रभावित किया जाता है, इन सबका अध्ययन मनोविज्ञान के अंतर्गत आता है। सभी व्यक्तियों के सोचने व समझने का तरीका भिन्न होता है। परिस्थिति विशेष का प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति पर अलग–अलग पड़ता है।

''ध्रुवस्वामिनी'' नाटक की पटकथा को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से प्रासंगिक बनाया गया है। ध्रुवस्वामिनी, चन्द्रगुप्त व रामगुप्त इसके प्रमुख पात्र हैं। रामगुप्त जैसे अयोग्य व डरपोक शासक से मुक्ति ध्रुवस्वामिनी का उद्धार एवं पुनर्विवाह आधिकारिक तौर पर इस नाटक की मुख्य घटनाएँ हैं जिसके आधार पर संपूर्ण नाटक में नारी की समस्याओं का चित्रण किया गया है। भारतीय समाज में प्राचीनकाल से नारी को भोग–विलास की वस्तु समझना, अपने स्वार्थी के लिए प्रयोग करना, उसके हृदय की भावना

को कुचलकर उसे विभिन्न बंधनों में बांधना, यहाँ तक कि शादी जैसे पवित्र बंधन के लिए उसकी इच्छाओं को अनदेखा करना आदि ऐसी समस्याएँ हैं जो इस नाटक में उठाई गई हैं। कल्पना के माध्यम से प्रसाद जी ने इस समस्या का निराकरण किया है। जब धर्मगुरु स्वयं रामगुप्त से ध्रुवस्वामिनी की मुक्ति को धर्म के अनुकूल मानते हैं। इसके अंत में लोकतांत्रिक मूल्यों को भी दर्शाया गया है, जहाँ जनता स्वयं अयोग्य शासक को हटाने का निर्णय लेती है।

शब्द–कुँजी – नारी, मनोविज्ञान, डरपोक, कायर, शालीनता, देवता, राक्षस।

शोधपत्र— ''ध्रुवस्वामिनी'' जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित ऐतिहासिक व पौराणिक नाटक है। इसमें गुप्त वंश और शक वंश में आंतरिक समस्या का वर्णन किया है। इसमें नवीन समस्या को इतिहास की प्राचीनता के माध्यम से उजागर किया गया है। इसकी प्रमुख पात्र ध्रुवस्वामिनी है। इसका पूरा कथानक इसी के इर्द–गिर्द बुना गया है। इसमें स्त्री समस्या को चित्रित किया है। इसके मुख्य पात्र ध्रुवस्वामिनी, रामगुप्त, चन्द्रगुप्त, शिखर स्वामी, मंदाकिनी, शकटार, कोमा, मिहिर देव आदि हैं। नाटक के प्रारंभ में ध्रुवस्वामिनी एक खड्गधारिणी से चन्द्रगुप्त की मुक्ति की बात करती है। वह सोचती है कि उसके पिता ने उसका विवाह चन्द्रगुप्त से तय किया था। लेकिन उसका बड़ा भ्राता अपनी वाचाल बुद्धि व षड्यंत्रकारी शिखर स्वामी के साथ मिलकर चन्द्रगुप्त को बंधक बनाकर स्वयं राज्याधिकार प्राप्त कर लेता है। वह मन ही मन सोचती है कि पता नहीं राजा का मुझ पर कितना उपकार है। वह तो हमेशा मदिरा व विलासिता में डूबे रहते हैं। उन्होंने कभी भी मुझसे प्रेम से बाते नहीं कीं। लेकिन रामगुप्त जानता है कि वह चन्द्रगुप्त से प्रेम करती है। वह कहता है कि ''जो स्त्री दूसरे के शासन में रहकर प्रेम किसी अन्य पुरुष से करती है, उसमें एक गंभीर और व्यापक रस उद्वेलित रहता होगा।''[2] वह उस पर निगरानी रखने के लिए गुप्तचर रखता है। वह बिना उसकी इजाजत के कहीं नहीं आ–जा सकती। वह चाहता है कि ध्रुवस्वामिनी सिर्फ उसी से ही प्रेम करे। वह कहता है कि – ''जगत की अनुपम सुन्दरी मुझसे स्नेह नहीं करती और मैं हूँ इस देश का राजाधिराज।''[3] वह उससे बलपूर्वक विवाह तो कर लेता है। लेकिन उसके प्रति मन में कोई लगाव नहीं रखता। तभी शिखर स्वामी शकों के आक्रमण की सूचना देता है। लेकिन वह उसे अनसुना करता है। शिखर स्वामी कहता है कि शकों ने हमें चारों और से घेर लिया है। वह आक्रमण करना चाहते हैं। लेकिन वह शकों के पास संधि–पत्र भेजता है ताकि युद्ध ना करना पड़े। तभी रामगुप्त को पता चलता है कि शकटार उसके राज्य को हथियाना चाहता है। कायर

व डरपोक रामगुप्त शिखर स्वामी को कहता है कि बर्बर शकटार यही चाहता कि हम युद्ध ना करें तो ठीक है नहीं करते। लेकिन शिखर स्वामी कहता है कि शकटार ध्रुवस्वामिनी को उपहार स्वरूप प्राप्त करना चाहता है और अपने सामंतों के लिए मगध के सामंतों की स्त्रियाँ चाहता है। वह शिखर स्वामी व सामंतों से मिलकर यही चाहता है कि युद्ध ना करना पड़े – ''शिखर स्वामी : मैं क्या कहूँ? शत्रु–पक्ष का यही संधि संदेश है। स्वीकार न हो तो युद्ध कीजिए। शिविर दोनों और से घिर गया है। उसकी बात मानिये, या मरकर भी अपनी कुलमर्यादा की रक्षा कीजिए। दूसरा कोई उपाय नहीं।''[4] रामगुप्त छल–प्रपंच से भरा हुआ क्रूर, क्लीव, असमर्थ व विलास से भरा हुआ कायर पुरुष है। वह अपने स्वार्थ हेतू अपनी अर्धांगिनी को दूसरे पुरुष के हाथों सौंपने के लिए तैयार हो जाता है। ध्रुवस्वामिनी इसका विरोध करती है। वह अपनी व अपने गौरव की रक्षा करने की प्रार्थना करती है। वह आत्महत्या के लिए तैयार हो जाती है। लेकिन उसी समय चन्द्रगुप्त वहाँ पहुँचकर उसे बचा लेता है। वह कहता है – ''देवि, जीवन विश्व की संपति है – प्रमाद से क्षणिक आवेश में या दुख की कठिनाई से उसे नष्ट करना तो ठीक नहीं।''[5] यदि रामगुप्त यही चाहता है तो मैं जाऊँगा शक शिविर में परन्तु महादेवी के साथ जाने के लिए सहमत नहीं हूँ। यह रामगुप्त की आज्ञा है कि वह सामंत कुमारों के साथ जाने के लिए तैयार हो। चन्द्रगुप्त स्त्री वेश धारण कर ध्रुवस्वामिनी के साथ शक शिविर में प्रवेश करता है। शकराज यह समाचार सुनकर प्रसन्न होता है। उसकी पत्नी कोमा व उसके पिता मिहिर देव स्त्री का अपमान करने से उसे रोकते हैं। वह उनकी बातों को अनसुना कर देता है। कोमा अपने पति को कहती है कि आज तुम एक पत्नी को अपने पति से अलग करके गौरव की अनुभूति के लिए अनर्थ कर रहे हो। वह हँस कर कहता है कि पगली यह मेरी राजनीति का प्रतिशोध है। परन्तु कोमा इसका विरोध करती हुई कहती है – ''किंतु राजनीति का प्रतिशोध क्या एक नारी को कुचले बिना नहीं हो सकता।''[6] वह उसको कहता है कि जिस विषय का ज्ञान नहीं उस पर विवाद का अधिकार नहीं है। वह कोमा व मिहिर देव को अपमानित करता है। मिहिर देव अमंगलकारी धुमकेतू की ओर इशारा करते हुए चला जाता है। वह कोमा को अपने साथ ले जाना चाहता है। वह पति से सच्चा प्रेम करने वाली एक दार्शनिक, करूणा की मूर्ति व भावुक स्त्री है। कोमा अपने पिता के साथ चली जाती है तभी शकटार धुमकेतू को देखकर कहता है कि कुछ अमंगलकारी होने वाला है। वह चिंतित हो जाता है। तभी एक प्रहरी ने शकटार को कहा कि ध्रुवस्वामिनी एकांत में भेंट करना चाहती है। वह इसकी आज्ञा दे देता है। चन्द्रगुप्त व शकटार में युद्ध होता है और शकटार मारा जाता है। शकटार की मृत्यु के पश्चात् शक–दुर्ग में 'ध्रुवस्वामिनी की जय हो' का स्वर गूंजने लगता है। सभी चन्द्रगुप्त और ध्रुवस्वामिनी की विजय पर खुशी से झूम उठते

हैं। शक–दुर्ग के अन्दर महादेवी चिंतित अवस्था में बैठी है। विजय का समाचार सुनकर रामगुप्त वहाँ पहुँच जाता है और महादेवी के बारे में पूछता है। वह उससे शीघ्र मिलना चाहता है, परन्तु महादेवी कहती है कि वह थकी हुई है और उसे यहाँ नहीं आना चाहिए। वह चन्द्रगुप्त के जख्मों के बारे में पूछती है। सैनिकों ने उसे आश्वस्त किया कि वे ठीक हैं, और आराम कर रहे हैं उसी समय मंदाकिनी महादेवी को 'बधाई हो भाभी' कहती है। मंदाकिनी रामगुप्त व चन्द्रगुप्त की बहन है। महादेवी ने मंदाकिनी को कहा कि आज तुमने बहुत प्यारी बात कहकर व क्षमा माँगकर उसे वापस लेना चाहती हो। मैं न तो महादेवी हूँ और न ही तुम्हारी भाभी। पुरोहित से महादेवी अपने अधिकारों के प्रश्न करती है और रामगुप्त के साथ संबंध को लेकर पूछती है। वह पुरोहित को कहती है कि जो रानी शत्रु को उपहार स्वरूप भेंट कर दी जाती है तो वह महादेवी कैसे हो सकती है। वह मंदाकिनी का 'भाभी' कहना भी अस्वीकार कर देती है। जब पुरोहित ने मंत्रों को पढ़कर मेरा विवाह रामगुप्त संग करवाया था उसी दिन से मैं अपमान सहती आई हूँ। शक–दुर्ग में जाने से पहले मैंने अपने प्राणों की रक्षा हेतू भीख मांगी थी। परंतु मुझे पशु समान समझकर बलपूर्वक वहाँ भेजा गया। अब भी मंदाकिनी मुझे 'भाभी' कहना चाहती है। वह अपने विवाह को राक्षस विवाह का दर्जा देती है। तभी पुरोहित धर्मशास्त्र देखने की बात कहता है। मंदाकिनी भी पुरोहित को फटकारते हुए कहती है कि तुम स्त्री को धर्म के बंधन में बांधकर उसकी सहमती के बिना उसके सभी अधिकार छीन लेते हो। विवाह संबंध में बांधकर उसे अबला व असहाय होने पर मजबूर करते हो, क्या तुम्हारा धर्मशास्त्र यही कहता है। ये सभी बातें सुनकर महादेवी धर्म और विवाह को खेल मानती है। क्योंकि क्लीव, कायर की पत्नी होने से अच्छा, वह मृत्यु को मानती है। उसी समय वहाँ पर कोमा अपने पिता मिहिर देव के साथ आकर महादेवी से अपने पति के शव को प्राप्त करने की बात करती है। यह कोमा के अंतर्मन की विडम्बना ही है कि वह अपने पति के शव के लिए यहाँ खिंची चल आई। वह मंदाकिनी को कहती है कि एक स्त्री के हृदय को कोई स्त्री ही समझ सकती है। महादेवी कोमा को कहती है कि प्रेम के नाम पर जलना चाहते हो तो जलो। वह सैनिकों को शव ले जाने की अनुमति प्रदान कर देती है।

प्रसाद जी ने कोमा के माध्यम से स्त्री जीवन की कोमल पीड़ा व त्रासदी का चित्रण बड़े ही मार्मिक ढंग से किया है। जब वह अपने पति का शव लेकर जाती है तो रास्ते में रामगुप्त के सैनिकों द्वारा उसके पिता सहित मारी जाती है। कोमा का अंत बड़ा ही मार्मिक है। मंदाकिनी चन्द्रगुप्त को आराम करने को कहती है परन्तु वह यहॉ और अधिक ठहराना नहीं चाहता। क्योंकि उसका कर्तव्य पूरा हो गया है। परन्तु मंदाकिनी कहती है कि भाभी की दशा ठीक नहीं है। क्या हुआ उनको। मेरी पत्नी

आज मेरे कारण मेरी नहीं है। यह कायरता कब तक चलेगी। मेरे प्रति होने वाले अन्याय को मैनें स्वयं अपनी आँखों से देखा। सामंत कुमार कहता है कि रामगुप्त जैसे कायर व पाखंडी राजा को राज्य को कलुषित करने वाले के प्रति श्रद्धा भाव नहीं होने चाहिए। महादेवी आपकी आज्ञा के बिना यहॉ आपका अपमान होगा। तभी रामगुप्त आकर सामंतों व चन्द्रगुप्त को बंदी बना लेता है। महादेवी चन्द्रगुप्त को दण्ड अस्वीकार करने के लिए कहती है। रामगुप्त चन्द्रगुप्त को कुचृकी बुलाता है। वह चन्द्रगुप्त को लौहे की बेड़ियाँ तोड़ने की सलाह देती है। वह महादेवी को चुप रहने की सलाह देता है। कौन महादेवी को चुप रहने की सलाह देता है कौन महादेवी मुझे आश्चर्य होता है कि जो एक दासी की तरह शक शैया पर भेजी गई वह महादेवी ''चुप रहो, प्रवचना के पुतले! स्वार्थ के घृणित प्रपंच चुप रहो।''[7] वह रामगुप्त की पत्नी होना अस्वीकार करती है। वह उसे काल सर्पिणी कहकर और धर्म का थोड़ा भी डर नहीं है आदि बातें कहकर डराता है। वह कहती है कि शिखर स्वामी रामगुप्त को भी बंदी बना लो। मंदाकिनी इसका विरोध करते हुए कहती है कि ऐसा करना गुप्त सम्राट को शोभा नहीं देता। रामगुप्त ध्रुवस्वामिनी को बंदी बनाने का आदेश देता है। यह सुनकर चन्द्रगुप्त लौह शृंखला को तोड़कर मुक्त हो जाता है। वह शिखर स्वामी व रामगुप्त को सकुशल बाहर निकलने के लिए कहता है। स्वयं को शकराज के अधिकारों का स्वामी घोषित करता है। पुरोहित धर्मशास्त्र के आधार पर कहता है कि रामगुप्त का महादेवी पर कोई अधिकार नहीं है। चन्द्रगुप्त को राज्याधिकार प्राप्त हो जाता है। तभी रामगुप्त चन्द्रगुप्त पर तलवार से वार करने के लिए आगे बढ़ता है तो सामंत के हाथों मारा जाता है। उसी समय चन्द्रगुप्त व ध्रुवस्वामिनी की जय हो के नारे गूँजने लगते हैं। तभी पर्दा गिर जाता है और नाटक समाप्त हो जाता है।

निष्कर्ष— जयशंकर प्रसाद ने इस नाटक में पात्रों के अंतर्मन में चलने वाली घटनाओं का सजीव चित्रण किया है। रामगुप्त व शिखर स्वामी की कुटिल बुद्धि का चित्रण कर राजनीतिक व्यवस्था के भ्रष्ट मूल्यों पर प्रहार किया है। इसमें चित्रित सभी पात्रों का मनोविज्ञान अलग–अलग है। रामगुप्त ने अपनी कुटिल बुद्धि के कारण ध्रुवस्वामिनी व राज्य पर अधिकार कर लिया है। भोग विलास में लिप्त होने के कारण उसे यह नहीं पता कि राज्य में क्या हो रहा है। अपने अंतर्मन युद्ध के कारण ही महादेवी अपने अभिमान की रक्षा हेतु इसका विरोध करती है। इसमें ध्रुवस्वामिनी व रामगुप्त के अंतर्मन का द्वंद्व भी साफ दिखाई देता है। कोमा एक भावुक, पतिव्रता स्त्री है। वह अपने पति के भ्रष्ट मार्ग अपनाने पर उसका विरोध करती है। इसमें मंदाकिनी संवदेनशील, साहसी व न्यायप्रिय पात्र है।

संदर्भ

1 ब्रजकुमार मिश्र, ''मानव व्यवहार का अध्ययन'', पृ0 सं0 7

2 जयशंकर प्रसाद, ध्रुवस्वामिनी, पृ0 सं0 7

3 वही, पृ0 सं0 7

4 वही, पृ0 सं0 14

5 वही, पृ0 सं0 18

6 वही, पृ0 सं0 20

7 वही, पृ0 सं0 45